पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

वर्ष: 2; संख्या:2; जनवरी-जून, 2021; पृष्ठ संख्या: 35-43

मिजोरम की जनजातियाँ और भाषाएँ

✍ डॉ. सी ललरमपना

मिजोरम की मिजो मूल जनजतियों की पाँच उपजातियाँ ऐसी हैं, जिनकी अपनी अलग बोली या भाषा है। तथापि संपर्क भाषा के रूप में यहाँ मिजो भाषा का ही बहुतायत प्रयोग किया जाता है। ये पाँच उपजातियाँ अपनी अलग-अलग बोली के कारण कुछ सीमा तक ही अपनी पहचान बनाती है, जैसे- एक ही उपजाति म्हार की बोली म्हार की कई उपबोलियाँ हैं। ये हैं-

(अ) म्हार :

क. लोइत्लाङ, शाङचल :

(i) सियलछुङ (ii) दरछुङ (iii) लइचुङ (iv) वारते (v) त्लोमते (vi) पारते (vii) छुङते (viii) तुङते (ix) सुअमते (x) त्लाङते (xi) चोङछिम (xii) सियालन्ह्म (xiii) सइवाते (xiv) सुनथङ (xv) सुअक्सइ

ख. जउते :

(i) चोङवोरातू (ii) छुआनखुपातु (iii) चोङतुआलातु (iv) ह्राङसौते (v) पुसियाते (vi) साइयाते (vii) पारात (viii) ल्हिलेरा (ix) दारखोलाइआ (x) बुआनसुआङ

ग. डूरते :

(i) पूछिङाथ्लाह् (ii) साइदाङाथ्लाह्

घ. खोबुङ :

(i) रियाङसेते (ii) फेनते (iii) पाङमाते (iv) पाज़ामते

ङ. बियह्ते :

(i) ङमलाइ (ii) नमपुइ (iii) चुँगङोल (iv) ज़ाते (v) तमते/टमते (vi) फइशियाम (vii) दारनेइह् (viii) थियाङलाइ (ix) म्हूनशिङ (x) खूरबी (xi) पुइलौउ (xii) थ्लेइह्न

च. ठियक :

(i) खोज़ोल (i) टुअह्लोर (iii) बुह्हिल (iv) सेलाते (v) ह्लूचुङ (vi) काङबुर (vii) टमते (viii) आररौ (ix) हेकते (x) ललदान (xi) ह्राङाते (xii) कुङाते (xiii) वानकल

छ. पाउतू :

(i) छिङाते (ii) त्लुआङते (iii) बुआङज़ल (iv) छेह्लोन (v) साइवाते

ज. पुनते :

(i) छियरथ्लङ (ii) छियरछक

झ. दारङोन :

(i) कुबालङुल (i) फइहेङ

ञ. लुङतन :

(i) सोङाते (ii) इनफिमाते (iii) नुङाते (iv) त्लोङाते (v) मिह्रियमते (vi) इनतौवाते (vii) कैवोम (viii) लुङचुआङ

ट. लैरी :

(i) पुलमते (ii) नेइहङाइते (iii) पुरूआलते (iv) पुडाइयते

ठ. बनजङ :

(i) सिनाते (ii) सनाते (iii) फमहोइह्ते (iv) चोङन्हुनते (v) लामछङते

ड. पखुआङ :

(i) बुआङपुइ (ii) ह्नङुलते (iii) खुआङपुइ

ढ. शाङखोल :

(i) चोराइ (ii) सकेचेक

ण. म्हार लुसेइ :

(i) नेइह्रिचरह् (ii) न्हेह्चोङ (iii) लुअह्फूल/ लुवह्फूल (iv) लामथीक

लुसेइ :

क. पचुआउ :

(i) लियानथूङ (ii) लियानङोर (iii) ललबोमथ्लाह् (iv) चेरलल (v) छोनथ्लियक (vi) चुवावलाक (vii) दारचौ (viii) वारचुआन

ख. चुआउङउ :

(i) वानपुइआह्लइन (ii) चुमथ्लूक (iii) दारकिम (iv) ज़ोङपम (v) म्हुनपेल (vi) थ्लेह्ङेल (vii) अवम्हुन

ग. चुआउह्राङ :

(i) लथङ (ii) चुङपुइ (iii) चोनछोन (iv) चोनचिरह् (v) खुआङलोइ (vi) वाइचुआव

घ. छङते :

(i) दारछुन (ii) पामते (iii) वोकङहूआक (iv) कोलची (v) ङहकची (vi) लुङते (vii) चोङलुन (viii) लुमथङ (ix) तुमफा

ङ. चोङते :

(i) तुइछुङ (ii) लुङते (iii) पामते (iv) मुछिपछुआक

च. ह्वन्हार :

(i) हावथुल (ii) हावहुलह् (iii) तूलथङ (iv) सेनलाइ

छ. शाहसेल :

(i) सेलपुइ (ii) सोनल्लुङ (iii) सुमखूम (iv) सज़ा

ज. तउछोङ :

(i) तौपुइ (ii) छाकोम (iii) टौबुल (iv) चेमह्लेर

झ. वानछोङ :

(i) वानलुङ (ii) सुमखूम (iii) चेमह्लेर (iv) चेङरेल (v) काइथुम

ञ. छकछुआक/ हुआलङउ :

(i) चलथ्लेङ (ii) बौचुङ (iii) खूपनौ (iv) चेरपुत

हुआलहाङ :

(i) चलबुक (ii) बाइची (iii) चुमखाल (iv) तइह्लुङ (v) चेरत्लुआङ (vi) खुपनौ (vii) फङते (viii) फूङची

लूनखुआ :

(i) सियालछूङ (ii) ङलसिह् (iii) ङलछूङ

ट. ज़ह्म्हुआका के बच्चे/संतान (वंशज) :

(i) ज़देङ (ii) लियानथुङ (iii) लियानङेरह् (iv) थङलुआह् (v) पालियान (vi) रिबुङ (vii) ठङुर

ठ. ठङुरा के बच्चे (वंशज) :

(i) चोङलुल (ii) थङमाङ (iii) चेनकुआल (iv) साइलउ

(आ) रालते :

मिजो जनजातियों में रालते जाति ही एक ऐसी जाति है, जो मिजोरम के सभी जिलों में फैली हुई है। इनकी चार प्रमुख उपजातियाँ हैं। इन मुख्य उपजातियों को ही अन्य छोटी उपजातियों में बाँटा गया है। लोकमान्यता के अनुसार मंगोल देश से चीनी, तिब्बत तत्पश्चात् म्यांमार के काबो घाटी तक मिजो मूल के चियाङ जाति की सभी उपजातियाँ साथ-साथ थीं। परंतु

काबो घाटी से सभी उपजातियाँ आगे चलकर जाति के रूप में प्रतिष्ठित हुई और अलग-अलग दलों में वर्तमान म्यांमार के चीन हिल्स की ओर अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार पलायन करने लगी। रालते जाति की चार प्रमुख उपजातियों के चार प्रथम मुखियाओं के नाम इस प्रकार हैं-

1. कोलनी उपजाति का मुखिया- चलबोका (मुखिया को स्थानीय भाषा में 'लल' अर्थात् राजा कहा जाता है।)

2. सियाकएङ उपजाति के मुखिया- काइज़ोङा और चोङतुआला

3. खेलते उपजाति का मुखिया- लूतमङा

क. खेलते :

(i) लूतमाङ (ii) छिङह्लू (iii) म्हाइमोक (iv) वाङकेव (v) वौहाङ (vi) जावचा (vii) वौल्हू (viii) थातछिङ (ix) छियारचुआङ (x) ज़ल्हैय

ख. सियाकएङ :

(i) एङकाइ (ii) हायज़ङ (iii) हिल्लू (iv) हिलथङ (v) न्होलसूत (vi) थङबूर (vii) ख़ुमचियाङ (viii) चोङतुआल (ix) छह्कोम (x) लेह्वूङ

ग. लेलह्छुन :

(i) छुनथङ (ii) छियारकिम (iii) वोङसुआल (iv) तुङलेइ (v) लैहाङ (vi) चुआङलोक (vii) थङबुङ

घ. कोलनी :

(i) कोलवोम (ii) कोलतुङ (iii) चलचुङ (iv) चलबोक (v) बुङसूत/बुङसुत (vi) लौसुत (vii) रेङसी (viii) रेङङउ (ix) रेङह्राङ (x) रेङती (xi) चुआङएङ (xii) अरती (xiii) थङछुआन (xiv) हेलल्हूअ (xv) ठासुम (xvi) साफाइ (xvii) उइखोल (xviii) खोङोर

चोङथू :

(i) खूनतिल (ii) खूनसूत (iii) खूनत्ल्हङ (iv) हाइकोइ (v) वानचियाउ (vi) मलुआङ/ मलउआङ (vii) चिङरुआम (viii) थङछूङ (ix) साइथ्लेङ

खोलशिङ :

(i) मिदङ (ii) लैदिर (iii) पियलतेल (iv) लुङएन (v) थ्लउते (vi) मिलाइ vii) पारते viii) रोलछिम

वानछिया :

(i) थैदुह् (ii) ज़ापते (iii) दौछिल

चोह्ते :

(i) लियानन्हा (ii) छुआनहोइह् (iii) होनज़ोङ (iv) चमते (v) हलते (vi) थावमाव (vii) तामवारटामवा (viii) चोङदङ (ix) चोङफियाङ (x) चोनथिक

ङन्ते :

(i) कोङते (ii) जुअह्हिते (iii) दुअह्थ्लाङ (iv) दुअह्छक (v) लाउलौ (vi) चोङहोइह्

ङ. रोइह्ते :

(i) ज़ह्ते (ii) पियालतू (iii) अइते (iv) बुइते (v) म्हूङते (vi) छोरह्ते (vii) छेह्दुआह्

च. खियाङते :

(i) कुमछूङ (ii) खूपछूङ (iii) खूपथ्लाङ (iv) मुआलवुम (v) खेललौ (vi) छिङबेल (vii) चोङते

(इ) पइह्ते :

वर्तमान इस जाति की अधिकांश आबादी म्यांमार के तिदीम प्रांत में ही नहीं, बल्कि इस प्रांत के आसपास के अन्य प्रान्तों में फैली हुई है। माना जाता है कि जब अन्य जाति एवं उपजातियाँ तात्कालिक म्यांमार की पश्चिमी पहाड़ियों की ओर पलायन करने लगी थीं, तो इनकी कुछ उपजातियाँ भी मिजोरम की पूर्वी पहाड़ियों से होते हुए मणिपुर के दक्षिणी भागों में जा बसीं। उनमें से कुछ लोग वर्तमान मिजोरम की पूर्वी पहाड़ियों यथा चम्पहूआइ के आस-पास स्थायी रूप से बस गये। मणिपुर में इन्हें जउमी न कहकर 'पइह्ते' कहा जाता है। अतः आज इस जाति की पहचान 'पइह्ते जाति' के रूप में की जाती है। सन् 1948 में जब इन्होंने 'Paihte National Council' अर्थात् 'पइह्ते राष्ट्रीय समिति' की स्थापना की तो भारत सरकार से अपनी इसी जातीय नाम से अनुसूचित जनजातियों में सम्मिलित करने की मांग की। जिसे स्वीकृत कर भारत सरकार ने सन् 1956 को इन्हें पइह्ते जनजाति के नाम से अनुसूचित जनजातियों में सम्मिलित कर दिया।

पइह्ते जाति में भी कई उप जातियाँ देखने को मिलती हैं, जिनमें मुख्य रूप से निम्नलिखित उप जातियाँ प्रमुख हैं। पइह्ते बोली के अन्य (अलग) रूप :

(i) थ्हदउ (ii) सुकते (iii) थाउते (iv) थाइज़ङ (v) लौसाउ (लौसौ) (vi) फाइलेङ (vii) दारबुङ (viii) दीम (दिम) (ix) दिमलौ (x) वङतेह् (xi) जुङ (xii) फुननोम

रेनथ्लेइ :

(i) लियानल्हून (ii) ज़ाछिङ (iii) थङथोल (iv) तिनकुल्ह् (v) छिङथ्लङ (vi) सोह्नेल (vii) ठुआनदुरह् (viii) छोङहेक

त्लाउ :

(i) बुअलछुअक (ii) वानतोल (iii) बोलछिम (iv) थ्लेङङम

(ई) लुसेइ :

साधारणतः माना जाता है कि मिजो जाति ही लुसेइ या लुशाइ है। परंतु यह मात्र कोरी धारणा है। वर्तमान मिजोरम में जाति के आधार पर देखा जाए तो अन्य जातियों की अपेक्षा लुसेइ जाति के लोग अधिक संख्या में पाये जाते हैं। मान्यता है कि आरंभ में नोसोङ नामक व्यक्ति के दो पुत्र - सोङथू और ङाइते थे। इन दोनों भाइयों में सोङथू से वर्तमान पइह्ते ह्यपहले, ज़ौमीह् जाति और ङाइते से लुसेइ जाति का जन्म हुआ। ङाइते को लुसेइ जाति का मूल मानने के पीछे डॉ. वुम सोन यह तर्क देते हैं कि ङाइते ने ट्लापा को जन्म दिया और ट्लापा ने लुसेइ को। आगे चलकर लुसेइ के नाम से ही वर्तमान लुसेइ जाति का जातीय नामकरण किया गया।

जनजातियों में अपने पूर्वजों में से किसी एक के नाम को जाति मानकर अपने को उसे जाति या उपजाति का मानने की प्रथा का प्रचलन है। इस तथ्य के आधार पर डॉ. वुम सोन द्वारा लुसेइ जाति के बारे में दिए इस तर्क को प्रायः अधिकांश लोग सही मानते हैं।

(उ) लाइ (पोइ) :

मिजो जनजातियों में यही एक ऐसी जनजाति है जिनके इतिहास को समेटना सबसे कठिन माना गया है। जनसंख्या की दृष्टि से अन्य जनजातियों की अपेक्षा इनकी संख्या सबसे अधिक मानी जाती है, परंतु इस जाति के लिए सबसे बड़ी विडम्बना यह मानी जाती है कि इनकी कई उपजातियाँ 'जैसा देश, वैसा भेस' के तर्ज पर जहाँ कही भी रहे वहीं के हो गये। इस तरह अपनी अलग भाषा एवं संस्कृति के होते हुए भी इनकी मूल भाषा सीमित रह गयी है। लुसेई लोग इन्हें 'पोइ' कहते थे, हालांकि ये अपने को 'लाइ' कहलवाना अधिक पसंद करते हैं। मिजो जनजातियों में लाइ जाति ही ऐसी जाति है जो अन्य जातियों के मिजोरम आगमन के कई वर्षों बाद मिजोरम में आये।

फानआइ – पोइ लुसेइ :

(i) थाइ (ii) पाखुप (iii) तौरेल (iv) न्हियारचेङ (v) ज़ारेप (vi) शाङत्लिङ (vii) सुआकलिङ (viii) छुनछिर (ix) खिनतिन (x) निह्लियप (xi) अइरोन (xii) रुअह्ङाइ

पोइ :

(i) ज़हाउ (ii) हाउहुलह् (iii) हाउछूम (iv) छुनत्लङ (v) थनशाङ (vi) खलथङ (vii) बोइथङ (viii) बोइत्लुङ (ix) खुआङली (x) सुनथ्ल्ह् (xi) थ्नत्लाङ (xii) साइलुङ

फलाम पोइ :

(i) ह्लोनमुआल (ii) ललवोङ (iii) छोनछेक (iv) ह्लोनचेव (v) खोरुआ (vi) त्लाइछुन (vii) हूहा

मिजो की इन पाँच उपजातियों के अतिरिक्त भी अन्य गौण उपजातियाँ पायी जाती हैं। वे हैं-

(ऊ) लखेर या मारा जाति :

मिजोरम की जनजातियों में कुछ उपजातियाँ अपनी अलग बोली बोलते हैं। जैसे म्हार, पइह्ते, रालते और लाइ जाति के बड़े-बुजुर्ग आज भी अपनी जाति की बोली का प्रयोग करते हैं। इतना ही नहीं इन जनजातियों की बोली में कई ऐसे शब्द हैं, जिनका प्रयोग ये कुछ भाषिक तानों की भिन्नता के होते हुए भी सामानांतर अर्थ के रूप में करती हैं। परंतु मारा जातियों द्वारा बोली जाने वाली बोली मिजोरम की अन्य जनजातियों द्वारा बोली जाने वाली बोली से नितांत भिन्न है। मारा जाति के उद्भव एवं विकास के संदर्भ में कुछ विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विचारों को ही आधार माना जाता है, जो इस प्रकार हैं- प्रारम्भ में इस जाति को खुमी जाति के लोग और वर्तमान आराकान के पहाड़ियों में रहने वाली मिजो जनजाति के लोग 'शानदोस' कहकर पुकारते थे। वही लुसेइ लोग इन्हें 'लखेर' कहते थे।

वर्तमान म्यांमार के हल्खा प्रांत के लोग इन्हें 'मिरम' या 'मीरम' कहते हैं। परंतु 10 अक्टूबर, 1963 को जब इस जाति के विद्वान एवं नेताओं का सम्मेलन बुलाया गया, तब उस सम्मेलन में एक मत से यह पारित किया गया कि इस जाति को 'मारा' नाम से जाना और संबोधित किया जाए। बाद में राजनीतिक दलों द्वारा भी उक्त सम्मेलन की माँग का अनुमोदन किया गया। अतः 1978 में सर्वसम्मति से लखेर जाति का नया नामकरण 'मारा' जाति के रूप में प्रशासनिक रूप से किया गया। अतः वर्तमान में इस जनजाति को 'मारा' जनजाति के नाम से ही जाना और पहचाना जाने लगा है। अन्य जनजातियों की तरह ही मारा भी कई उपजातियाँ में विभाजित हैं जो इस प्रकार हैं-

(i) चापी (ii) दौवा (iii) ङियाह्फिया (iv) होथाइ (v) हेइमा (vi) लावाउ (vii) खापी (viii) लेइता (ix) लियालाइ (x) लोचेइ (xi) मौतू (xii) रातू

(xiii) साबी (xiv) राजाउ (xv) ह्लिछोउ आदि प्रमुख हैं।

(ऋ) चकमा (तकम) :

वर्तमान मिजोरम के दक्षिणी भाग के बांग्लादेश की सीमा के आस-पास रहने वाली चकमा जातियों के बारे में किसी भी मिजो इतिहासकार ने मिजो जनजातियों के इतिहास में नहीं लिखा है। तथापि मारा और लाइ जातियों की तरह ही चकमा जाति को भी स्वायत्त जिला परिषद देकर इनके भारतीय होने को प्रमाणित किया गया है। तथापि इस जाति के अधिकांश लोग बांग्लादेश में रहते हैं। अतः मिजोरम में स्थायी रूप से रहनेवाले चकमा जाति की निश्चित संख्या का अनुमान लगा पाना कठिन ही नहीं, वरन असंभव ही जान पड़ता है। स्वायत्त जिला परिषद के अधीन रहने से पहले मिजोरम की सभी जनजातियाँ इन्हें 'तकम' के नाम से ही जानते और संबोधित करते थे।

सन् 1953 में तात्कालिक पोइ लखेर क्षेत्रीय परिषद वर्तमान में 'पोइ' का 'लाइ' और 'लखेर या मारा' नाम को सन् 1989 में भारतीय संविधान में संशोधन कर स्वीकार किया गया। इस संशोधन में चकमा जाति को भी सम्मिलित किया गया था। 29 अप्रेल 1972 में जब पोइ लखेर क्षेत्रीय परिषद के तीन खंड कर उन्हें तीन अलग-अलग स्वायत्त जिला परिषदों में बांटा गया तो मिजोरम में चकमा स्वायत्त जिला परिषद वजूद में आयी। इनकी भाषा बांग्ला भाषा से काफी मिलती-जुलती है और मुख्यतः ये बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। खोङ जाति के लोग अपनी अलग ही भाषा और लिपि का प्रयोग करते हैं। इनकी लिपि को भाषाविद 'आराकानी' लिपि कहते हैं। उन्हीं के वंशज आगे चलकर वर्तमान चकमा जाति के रूप में अस्तित्व में आये। सत्य कुछ भी हो, आज मिजोरम के दक्षिणी क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत चकमा स्वायत्त जिला परिषद को नहीं नकारा जा सकता।

ग्रंथ-सूची:

अंग्रेजी:

Chhangte, Ralluaii .Mizo tawng Chikna. revised version. 2010.

Lalthangliana, B. Mizo Tawng Peng Hrang Hrang, 2010

MILLTA. Mizo Tawng Zir Zauna Bu Thar, 2012

हिन्दी:

कामलोवा, सी.मिजो जनजातियों का परिचयात्मक संक्षिप्त इतिहास, 2016

संपर्क-सूत्र:
हिन्दी शिक्षा अधिकारी
निदेशालय विद्यालय शिक्षा विभाग, मिजोरम

पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका